**निदेशक मंडल**

| | | |
|---|---|---|
| प्रो. के. विजयराघवन | : | अध्यक्ष |
| डॉ. रेणु स्वरूप | : | प्रबंध निदेशक |

**गैर कार्यकारी स्वतंत्र निदेशक**

| | | |
|---|---|---|
| डॉ. अशोक झुनझुनवाला | : | निदेशक |
| डॉ. गगनदीप कांग | : | निदेशक |
| प्रो. दीपक पैंटल | : | निदेशक |
| डॉ. दिनकर एम सालुंके | : | निदेशक |
| डॉ. मोहम्मद असलम | : | निदेशक (सरकार नामित) |

**<u>प्रो. के. विजयराघवन dका परिचय</u>**

प्रोफेसर के. विजयराघवन 28 जनवरी 2013 से भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव हैं। इससे पहले, वे टाटा मौलिक अनुसंधान संस्थान (टीआईएफआर) के राष्ट्रीय जैविक विज्ञान केंद्र (एनसीबीएस) के निदेशक तथा स्टेम सेल बायोलॉजी संस्थान और पुनर्योजी चिकित्सा (इनस्टेम), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के एक नए स्वायत्त संस्थान के अंतरिम अध्यक्ष थे। प्रो. विजयराघवन ने विज्ञान को अपना योगदान दिया और उन्हें व्यापक मान्यता प्राप्त है। एक विकास जीवविज्ञानी के रूप में उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्होंने 2011 में एडिनबर्ग विश्वविद्यालय से मानद डॉक्टर की। उन्हें स्मृति विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के जे. सी. बोस अध्येतावृत्ति प्राप्त हुई। उन्होंने 2010 में रॉयल सोसायटी में जे. सी. बोस स्मृति व्याख्यान दिया। उन्हें 2009 में जीवन विज्ञान में आरंभ किए गए इंफोसिस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें 1998 में भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित विज्ञान पुरस्कार **शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार**, प्रदान किया गया। वे भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी और भारतीय विज्ञान अकादमी के एक सदस्य हैं और उत्तरार्द्ध में उन्होंने परिषद के लिए भी कार्य किया है। प्रो. विजय राघवन एकमात्र भारतीय हैं जो यूरोपीय आण्विक जीवविज्ञान संगठन के एक एसोसिएट सदस्य के रूप में निर्वाचित किया गया है। 2012 में, प्रो विजयराघवन को रॉयल सोसाइटी का अध्येता निर्वाचित किया गया था।

**डॉ. रेणु स्वरूप का परिचय**

**डॉ. रेणु स्वरूप वर्तमान में जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के वरिष्ठ सलाहकार है।** डॉ. रेणु स्वरूप आनुवांशिकी और पादप में पीएचडी प्रजनन और उन्होंने राष्ट्रमंडल छात्रवृत्ति के तहत जॉन इन्नेस सेंटर, नॉर्विच ब्रिटेन में पोस्टडॉक्टरल अध्येतावृत्ति पूरी की और 1989 में, भारत लौट कर भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, विभाग में एक विज्ञान प्रबंधक के पद पर कार्यभार संभाला। डीबीटी में, वे राष्ट्रीय जैवसंसाधन विकास बोर्ड की अध्यक्ष हैं और ऊर्जा जीव विज्ञान, जैव संसाधन विकास और उपयोग एवं पादप जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में - जैव पूर्वेक्षण, ऊतक संवर्धन तथा अन्य बायोमास से जुड़े कार्यक्रमों के विकास, निधिकरण और निगरानी में शामिल हैं। एक विज्ञान प्रबंधक के रूप में, नीति योजना और कार्यान्वयन से संबंधित मुद्दे भी उनके कार्य का एक हिस्सा हैं। वे 2001 में जैव प्रौद्योगिकी संकल्पना के निर्माण तथा दूरदृष्टि 2007 में विशेषज्ञ समिति की सदस्य सचिव के रूप में राष्ट्रीय जैव प्रौद्योगिकी विकास कार्य नीति में सक्रिय रूप से संलग्न रही। वे प्रधानमंत्री की वैज्ञानिक सलाहकार समिति द्वारा गठित विज्ञान में महिलाओं के कार्यदल की सदस्य भी थीं। उन्हें 2012 में **"बायो स्पेक्ट्रम पर्सन ऑफ द इयर एवॉर्ड"** से सम्मानित किया गया था।

**स्वतंत्र निदेशकों का परिचय**

## डॉ. अशोक झुनझुनवाला

डॉ. झुनझुनवाला आईआईटी मद्रास में प्रोफेसर है। उन्होंने आईआईटी, कानपुर से अपनी बी.टेक. की डिग्री और यूएसए के मेन विश्वविद्यालय से एमएस और पीएचडी की डिग्री प्राप्त की है। वे 1979 से 1981 तक वॉशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी में थे और उसके बाद से वे आईआईटी मद्रास में हैं, जहां वे दूरसंचार और कम्प्यूटर नेटवर्क समूह (टेनेट) का नेतृत्व करते हैं। यह समूह दूरसंचार, बैंकिंग, आईटी और भारत के लिए प्रासंगिक प्रौद्योगिकियों (सौर सहित) के विकास में उद्योग के साथ कार्य करता है और ग्रामीण प्रौद्योगिकियों पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है। यहां पिछले बीस वर्षों में सत्तर से अधिक कंपनियों को इंक्यूबेट किया गया है। वे आईआईटीएम इनक्यूबेशन प्रकोष्ठ के अध्यक्ष, स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र (एचटीआईसी), के अध्यक्ष तथा आईआईटी मद्रास में ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य इनक्यूबेटर (आरटीबीआई) के उपाध्यक्ष और आईआईटीएम अनुसंधान पार्क के प्रभारी प्रोफेसर रह चुके हैं। उन्होंने "अभियांत्रिकी शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन (क्यूईईई)" नामक एक मानव संसाधन विकास मंत्रालय समिति की अध्यक्षता भी की, जो आईआईटी और एनआईटी के अलावा अन्य 500 भारतीय इंजीनियरिंग कॉलेजों पर केंद्रित है।

डॉ. अशोक झुनझुनवाला को 2002 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। उन्हें 1998 में शांति स्वरूप भटनागर पुरसकार, वर्ष 1997 के लिए डॉ. विक्रम साराभाई अनुसंधान पुरस्कार, वर्ष 2000 में भारतीय विज्ञान कॉन्ग्रेस में मिलेनियम पदक और वर्ष 2002 में "विज्ञान और प्रौद्येगिकी में उत्कृष्ता" के लिए एच के फिरोडिया पुरस्कार, वर्ष 2004 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए श्री ओम प्रकाश भसीन फाउंडेशन पुरस्कार, वर्ष 2006 के लिए इंसा द्वारा जवाहर लाल नेहरू जन्म शताब्दी व्याख्यान पुरस्कार, वर्ष 2006 में आईबीएम द्वारा आईबीएम नवाचार और नेतृत्व मंच पुरस्कार, 2009 में बर्नार्ड लो ह्यूमेनेटेरियन एवॉर्ड, 2010 में नवाचार के जरिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सर्वोत्तम उपयोग हेतु "भारत अस्मिता विज्ञान - तंत्र ज्ञान श्रेष्ठ पुरस्कार", 2008 में इंस्टीट्यूट ऑफ ब्लैकिंग इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, स्वीडन तथा 2010 में मैन यूनिवर्सिटी, यूएसए द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। वर्ष 2010 में उन्हें डीएसटी, भारत सरकार द्वारा जे सी बोस अध्येतावृत्ति प्रदान की गई, टीआईई द्वारा द्रोणाचार्य पुरस्कार तथा हाल ही में 2011 में निवेशक चुनौती में सर्वोच्च 11 के सर्वोच्च निवेशक के पुरस्कार से भी नवाजा गया है। वे विश्व बेतार अनुसंधान फोरम, आईईईई तथा आईएनएई, आईएएस, इंसा एवं एनएएस सहित भारतीय अकादमियों के अध्येता है।

डॉ. झुनझुनवाला टाटा टेलीसर्विसेज (महाराष्ट्र) लि., पोलारिस, 3 आई इंफोटेक, सास्केन, तेजस, टाटा कम्युनिकेशन्स, एक्सीकोम और महेन्द्रा रेवा इलेक्ट्रिकल्स वीकल्स प्रा. लि. के बोर्ड में निदेशक हैं। वे अनेक शैक्षिक संस्थानों तथा बाइरैक सहित 25 कंपनियों के बोर्ड सदस्य है। वे 2004-2014 के बीच प्रधानमंत्री द्वारा गठित वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सदस्य थे।

**डॉ. गगनदीप कांग**

डॉ. गगनदीप कांग क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज (सीएमसी) वेल्लोर, भारत के गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल विज्ञान प्रभाग में प्रोफेसर हैं। वे वेलकम ट्रस्ट रिसर्च लैब और सीएमसी के गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल विज्ञान प्रभाग की प्रमुख है।

डॉ. कांग की अनुसंधान कार्य बाल आंत्रशोध पर अनुसंधान रोटावायरस महामारी विज्ञान, रोकथाम और टीका विकास पर केन्द्रित है। आण्विक विभेद निगरानी के लिए उन्होंने भारतीय एंटेरिक वायरोलॉजी प्रयोगशालाओं का एक नेटवर्क विकसित करने का कार्य किया है तथा एसईएआरओ हेतु डब्ल्यूएचओ रोटावायरस संदर्भ प्रयोगशाला के लिए कार्य किया, जिनके परिणामस्वरूप एपिडेमियोलॉजी, भारत में इसके भार और फैलाव पर अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई। आंत के कार्य पर अध्ययन अतिरिक्त के तहत ने आंत संक्रमण के परिणाम तथा लंबी अवधि में वृद्धि और विकास पर इसके प्रभावों के क्रम की जांच की। रोटावायरस टीकों पर

क्लिनिकल अनुसंधान की वजह से पहले चरण से दूसरे चरण की अध्ययन की सुविधाएं उपलब्ध हुई और टीके के विकास के लिए प्रयोगशाला परख में सहायता मिली।

डॉ. कांग के कार्य को अमेरिकी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ, वेलकम ट्रस्ट, बिल एण्ड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन, यूरोपियन संघ और अन्य अंतरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय निधिकरण से वित्तीय सहायता मिली है। उनके कार्यों को उच्च मानक वाले राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर की 200 से अधिक पत्रिकाओं में प्रकाशन किए गए हैं और उनके शैक्षिक योगदान को प्रथम महिला और प्रथम भारतीय के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। ट्रॉपिकल दवाओं की प्रतिष्ठित मैन सन पाठ्यपुस्तक के संपादन के लिए उनको आमंत्रित किया गया था। उनके समूह द्वारा अनेक अनुसंधान किए गए हैं, जिनसे दस्त के रोग की रोकथाम के लिए व्यावहारिक हस्तक्षेप मिले हैं और इलाज की तकनीकों तथा टीकों के रूप में आगे हस्तक्षेपों के लिए बुनियादी कार्य जारी है।

वे एमबीबीबीएस, एमडी हैं और उन्हें रॉयल कॉलेज ऑफ पैथोलॉजिस्ट, लंदन की अध्येतावृत्ति तथा सीएमसी से पीएच.डी डिग्री प्राप्त है। वे भारतीय विज्ञान अकादमी, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी और अमेरिकी अकादमी ऑफ माइक्रोबायोलॉजी की निर्वाचित अध्येता भी हैं।

**प्रो. दीपक पेंटल**

प्रो. दीपक पेंटल दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति हैं और वर्तमान में विश्वविद्यालय के दक्षिणी परिसर में आनुवंशिक विभाग में प्रोफेसर हैं। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग से अपनी स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है और इसके बाद उन्होंने रोजर्स यूनिवर्सिटी, यूएसए से पीएच.डी की है। वे 1978 - 84 के बीच यूनिवर्सिटी ऑफ नोटिंघम में पोस्ट डॉक्टरल तथा विश्वविद्यालय अनुसंधान अध्येता रहे हैं। प्रो. पेंटल की अनुसंधान रुचियों में सरसों और कपास का प्रजनन है। उन्होंने राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय अभिजात समीक्षित पत्रिकाओं में 70 से अधिक अनुसंधान पत्र प्रकाशित किए हैं और उनके कार्यों से संकर बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी में उल्लेखनीय बदलाव आया है। वे राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारतीय विज्ञान अकादमी और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के निर्वाचित सदस्य हैं। प्रो. पेंटल को अनेक पुरस्कार दिए गए हैं, जिनमें शामिल हैं - 2004 में जवाहर लाल नेहरू अध्येतावृत्ति, 2007 में फ्रांस गणतंत्र सरकार द्वारा 'ऑफिसर डेस पालमेस अकडेमिक्स', 2008 में ओम प्रकार भसीन पुरस्कार, 2010 में डीएसटी से जे सी बोस अध्येतावृत्ति, 2010 में जीवन विज्ञान में नवाचारी अनुसंधान और विकास के लिए फिक्की पुरसकार और 2012 में यूनिवर्सिटी ऑफ नॉटिंघम से डीएससी (एचसी)।

**डॉ. दिनकर मासनु सालुंके**

**डॉ सालुंके वर्तमान में क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केंद्र, फरीदाबाद के कार्यकारी निदेशक हैं।**

भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर से **पीएचडी प्राप्त करने के बाद (1983)** उन्होंने यूएसए में ब्रैंडिस यूनिवर्सिटी में पोस्ट डॉक्टरल अनुसंधान किया और उसके बाद 1988 में राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली वापस आए, जहां से वे इस समय अवकाश पर हैं।

**डॉ. सालुंके की अनुसंधान रुचियां** इम्यून मान्यता, आण्विक नकल और एलर्जी का संरचनात्मक जीव विज्ञान में है।

**व्यावसायिक निकायों की अध्येतावृत्ति**

वे इंडियन साइंस अकेडमी (2004), इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज (2001) और नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज (भारत) (1995) के एक अध्येता हैं।

**डॉ. सालुंके को कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं -**

जीव विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए जीएन रामचंद्रन स्वर्ण पदक (2010), जेसी बोस नेशनल फैलोशिप अवार्ड (2007), चिकित्सा विज्ञान में बुनियादी अनुसंधान के लिए रैनबैक्सी रिसर्च अवार्ड (2002), जीव विज्ञान के लिए शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार (2000) तथा राष्ट्रीय बायोसाइंस पुरस्कार (1999)।

**सरकार द्वारा नामित व्यक्ति**

**डॉ. मो. असलम**

डॉ. मोह. असलम वर्तमान में **जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी)** में सलाहकार (वैज्ञानिक 'जी') हैं। वे पादप जैव प्रौद्योगिकी तथा संबंधित क्षेत्रों में विभिन्न अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों की योजना, समन्वय और निगरानी में शामिल है। वर्तमान में वे डीबीटी के अनेक बड़े कार्यक्रमों को संभाल रहे हैं जैसे जैव प्रौद्योगिकी में उत्कृष्टता केन्द्र, उत्पादों में ट्रांसलेशनल अनुसंधान और औषधीय तथा सुगंधित पौधों से प्रसंसाधन और रेशम में इनका विकास। डॉ. असलम जैव प्रौद्योगिकी में उत्कृष्टता केन्द्रों की तकनीकी सलाहकार समिति और औषधीय तथा सुगंधित पौधों एवं रेशम में प्रौद्योगिकी विकास से प्रसंसाधित तथा उत्पादों में ट्रांसलेशनल अनुसंधान पर डीबीटी के विशेषज्ञ समूहों के सदस्य सचिव है। वे डीबीटी के तीन स्वायत्त संस्थानों - राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान (एनआईआई) नई दिल्ली, जैव संसाधन और स्थायी विकास संस्थान (आईबीएसडी), इम्फाल, मणिपुर, तथा इंटरनेशनल सेंटर फॉर जेनेटिक्स इंजीनियरिंग एण्ड बायोटेक्नोलॉजी (आईसीजीईबी), नई दिल्ली और साथ ही बायोटेक उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बाइरैक), नई दिल्ली के नोडल अधिकारी के तौर पर भी कार्य करते हैं।